ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष-18 | अंक- 20 | जनवरी-II | (पाक्षिक) | माउण्ट आबू | Rs. 8.00

जन सेवा में समर्पित पानीपत का नवनिर्मित ज्ञानमानसरोवर

सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी। साथ हैं ब्र.कु. अमीरचंद, ब्र.कु. हंसा, राज्यमंत्री कर्ण देव कम्बोज, ब्र.कु. भारत भूषण तथा पीछे समर्पित बहनें दिखाई दे रही हैं। सभा में शहर के प्रबुद्ध जन।

पानीपत-हरियाणा। ज्ञान मानसरोवर के उद्घाटन एवं ब्रह्माकुमारी बहनों के दिव्य समर्पण समारोह के अवसर पर 'परमात्म श्रीमत पर स्वस्थ एवं सुखी जीवन' विषयक भव्य कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने कहा कि संस्था के प्रारम्भ में सन् 1937 में पिता श्री ब्रह्मा और हम लगभग 300 मुट्ठी भर भाई-बहनें थे। उनकी सच्ची लगन और तपस्या ने भारत तो क्या समस्त विश्व के 140 देशों में नैतिक मूल्यों की स्थापना की है। पिता श्री ब्रह्मा ने नारी शक्ति को आगे बढ़ाया। उन्होंने बताया कि ब्रह्माकुमारी संस्था के जितने भी मुख्य सेवाकेन्द्र हैं सबकी संचालिका हमारी बहनें हैं। दादी जी ने विश्व शांति का संदेश देते हुए कहा कि यदि विश्व में शांति स्थापित करना चाहते हैं तो हमें पवित्रता को अपनाना अति अनिवार्य है। जीवन से सारी बुराइयों का त्याग कर यदि राजयोग का अभ्यास प्रतिदिन करेंगे तो घर, समाज तो क्या सारे विश्व में शांति आ जायेगी। इस अवसर पर मुख्य अतिथि कर्ण देव कम्बोज,खाद्य राज्यमंत्री ने संस्था के सामाजिक तथा आध्यात्मिक कार्यों की बहुत-बहुत प्रशंसा की।

ज्ञान-मानसरोवर जो कि 5 एकड़ भूमि में निर्मित है। जिसके तीसरे फेज़ 'दादी चन्द्रमणि युनिवर्सल पीस ऑडिटोरियम' का उद्घाटन दादी जानकी के कमल हस्तों द्वारा हुआ। यहाँ समय प्रति समय समाज के सभी वर्गों की उन्नति के लिए आध्यात्मिक कार्यक्रम चलते रहते हैं।

उद्घाटन समारोह में कृष्ण लाल पंवार,ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर ने कहा कि ऐसा भव्य सभागार का होना हरियाणा के लिए गौरव की बात है। इस अवसर पर राजयोगी ब्र.कु. अमीर चन्द,डायरेक्टर,पंजाब ज़ोन, राजयोगी ब्र.कु. करूणा,चीफ ऑफ मल्टी मीडिया, एवं राजयोगी ब्र.कु. मोहन सिंघल ने विचार व्यक्त किये। साथ ही ब्र.कु. भारत भूषण ने सबका अभिनंदन किया। ब्र.कु. सरला दीदी ने सबका धन्यवाद किया। इस अवसर पर भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन हुआ।

अलौकिक दिव्य समर्पण समारोह

इस अवसर पर ग्यारह बहनों ने स्वयं को आजीवन दादी जानकी की उपस्थिति में ईश्वरीय सेवार्थ समर्पित किया। इन पवित्र बहनों के माता-पिता व सम्बन्धी इस भव्य समर्पण समारोह के साक्षी बने। सभी बहनों ने परमात्मा के विश्व परिवर्तन के महान कार्य में खुद को समर्पित करने की दृढ़ प्रतिज्ञा ली।

समाज को दुराचार व दुर्व्यवहार से बचाएं : ब्र.कु. उषा दीदी

'जीवन का आधार, गीता का सार' विषयक कार्यक्रम में शरीक हुए शहर के प्रबुद्धजन

रायपुर-छ.ग.। आज समाज में हर मोड़ पर दुर्योधन, दु:शासन और शकुनी जैसे पात्रों का सामना करना पड़ रहा है। गीता में वर्णित हर पात्र आज भी प्रासंगिक है। हमारे आंतरिक अच्छे गुण ही वास्तव में पाण्डवों के प्रतीक हैं, इन गुणों का अवगुणों अर्थात् कौरवों से प्रतिपल सामना होता है। पाण्डव अर्थात् भगवान से प्रीत बुद्धि। यह विचार अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त स्वप्रबंधन विशेषज्ञा राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी ने ब्रह्माकुमारीज़ के शान्ति सरोवर में आयोजित 'जीवन का आधार, गीता का सार' विषयक गीता ज्ञान रहस्य प्रवचन माला में व्यक्त किये। दीदी ने बताया कि कुछ लोग चुनौतियों का सामना करके जीवन को सफल कर लेते हैं। जो लोग चुनौती के वक्त सही निर्णय ले पाते हैं, उनके लिए सफलता के द्वार खुल जाते हैं। जो लोग दुविधाओं में घिरे होते हैं, वह असफल हो जाते हैं। ऐसे तनाव, हताशा और निराशा से बाहर निकालने में गीता बहुत मददगार सिद्ध हो सकती है। उन्होंने कहा कि कौरव अर्थात् अधर्म के वाचक। धृतराष्ट्र अर्थात् जो राजसत्ता को बाहुबल से प्राप्त करते हैं। गांधारी अर्थात् विवेक रूपी आँखों पर सदा अज्ञानता की पट्टी बांधे हुए। कौरवों के नाम 'दु' अक्षरों से शुरू होते हैं। दुर्योधन अर्थात् धन का दुरूपयोग करने वाला। कुरूक्षेत्र अर्थात् कर्मक्षेत्र। यह संसार ही कर्मक्षेत्र है।

कार्यक्रम के दौरान अपने विचार व्यक्त करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी। सभा में ध्यान पूर्वक सुनते हुए शहर के गणमान्य लोग।

सभी समस्याओं का समाधान गीता में निहित है। उन्होंने कहा कि गीता में कर्त्तव्य से विमुख होने की बात नहीं की गई है। गीता में जो योग सिखलाया गया है, वह जीवन में संतुलन रखने के लिए है। योग से हमारे कर्म और व्यवहार में कुशलता आती है। आज जो हमारे जीवन में असंतुलन आ गया है, उसका प्रमुख कारण योग से दूर होना है। उन्होंने कहा कि परिवार से लेकर विश्व की सभी समस्याओं का समाधान गीता में समाया है। इसीलिए गीता को सभी शास्त्रों में श्रेष्ठ माना गया है।

गीता सम्पूर्ण मानवता का शास्त्र : उषा दीदी ने कहा कि गीता भगवान का गाया हुआ गीत है। चूंकि परमात्मा सभी आत्माओं का पिता है इसलिए यह सम्पूर्ण मानवता का शास्त्र है। श्रीमद्भगवद् गीता मनुष्यों में अच्छे संस्कारों का सृजन करती है। गीता में ऐसा अमृत समाया हुआ है कि वह हरेक व्यक्ति को अमरत्व की ओर ले जाता है। गीता के सार को जिसने भी जीवन में धारण किया है, वह अमर हो गए हैं।

इससे पूर्व गृह सचिव अरूण देव गौतम, महापौर प्रमोद दुबे, विधानसभा सचिव चन्द्रशेखर गंगराड़े, पत्रकारिता वि.वि. के कुलपति डॉ. मानसिंह परमार, उद्योगपति राजीव अग्रवाल और क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कमला दीदी ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।